

Class - 13-A. Paper - 1

Sub - Hindi (Horn) Paper - 1

by Roushon Kumar (R.B.G.R. College)

① प्रेमसाख्यान काव्य की काव्यप्रयोजन एवं काव्य प्रेरणा पर प्रकाश डालें।
 उत्तर— प्रेमसाख्यान काव्य की मूल-चरित्र की समझने के लिए सर्वप्रथम इसके प्रेरणास्त्रोत एवं प्रयोजन पर विचार कर लेना चाहिए। इस काव्यपरंपरा के संबंध में यहू आति प्रचलित है कि इससे संबंधित कवि सूफी मतानुयायी थे तथा उनका लक्ष्य सूफी मत का प्रतिपादन या प्रसार करना था। यह बात उस समय आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने तब कही थी जब कि इस परंपरा के छह-सात गीत ही उपलब्ध थे तथा इनमें से अधिकांश मुस्लिम कवि द्वारा रचित थे किंतु स्थिति अब वह नहीं रही। अब इस परंपरा में पचास से भी अधिक कवियों का पता चल रहा है जिनमें से बहुसंख्यक हिंदू थे। इन हिंदू कवियों ने काव्यारंभ में गणेश, सरस्वती, कृष्ण, ब्रह्म आदि देवी-देवताओं की स्तुति करते हुए अपने चर्म पर प्रकाशित व्यक्त की है। इतना ही नहीं, इस बात के भी अकाट्य प्रमाण उपलब्ध होते हैं कि इनमें से अनेक कवि निर्गुण सत्मत तथा सगुण कृष्ण-मूर्ति संप्रदायों से धमिले रूप से संबंधित थे। इन कवियों को तो सूफीमत में दीक्षित या उसके प्रतिपादक मानने का प्रश्न ही नहीं उठता। सच्ची मुस्लिम

कवियों की भी केवल मुस्लिम होने के कारण सूफी मान लेना उचित प्रतीत नहीं होता।

वस्तुतः मुस्लिम कवियों में कुछ कवि सूफी मतानुयायी रहे होंगे, किन्तु इसी से उनके काव्य का प्रयोजन सूफी मत का प्रचार मान लेना ठीक नहीं होगा, जैसा कि छिहरी-सतसई का राधावल्लभसंप्रदाय का प्रवर्तक मान लेना, क्योंकि छिहरी का राधावल्लभसंप्रदाय का अनुयायी सिद्ध किया जा सकता है।

वस्तुतः अनेक मुस्लिम कवियों ने अपने प्रेरणास्रोत एवं काव्य प्रयोजन का निर्देश करते हुए स्पष्ट रूप से कहा है जिससे उपर्युक्त भ्रांति का निराकरण होता है। उदाहरण के लिए मलिक मुहम्मद जायसी की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

॥ ओ मन जानि कवित अस कीन्दा
मुकु यह रहे जगत मह चीन्दा ॥
आलम की निम्न पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

॥ प्रीतिवत है सुनी सो कोई
कहे प्रीति हिय सुख होई ॥

वस्तुतः विभिन्न कवियों के अंतःसाध्य से यह प्रमाणित होता है कि उनका प्रयोजन यश प्राप्ति, अपनी काव्य कला का प्रदर्शन, युवकों का मनोरंजन या दुःखपूर्ण घटनाओं को भुलाना था।